Vol 3 Issue 4 Jan 2014

Impact Factor : 1.6772 (UIF)

ISSN No : 2249-894X

Monthly Multidisciplinary Research Journal

Review Of Research Journal

Chief Editors

Ashok Yakkaldevi
A R Burla College, India

Flávio de São Pedro Filho
Federal University of Rondonia, Brazil

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies, Sri Lanka

Welcome to Review Of Research

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2249-894X**

Review Of Research Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial Board readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

Advisory Board

Flávio de São Pedro Filho
Federal University of Rondonia, Brazil

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies, Sri Lanka

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Fabricio Moraes de AlmeidaFederal
University of Rondonia, Brazil

Catalina Neculai
University of Coventry, UK

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Horia Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Xiaohua Yang
University of San Francisco, San Francisco

Karina Xavier
Massachusetts Institute of Technology (MIT), USA

May Hongmei Gao
Kennesaw State University, USA

Marc Fetscherin
Rollins College, USA

Liu Chen
Beijing Foreign Studies University, China

Mabel Miao
Center for China and Globalization, China

Ruth Wolf
University Walla, Israel

Jie Hao
University of Sydney, Australia

Pei-Shan Kao Andrea
University of Essex, United Kingdom

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Ilie Pintea
Spiru Haret University, Romania

Mahdi Moharrampour
Islamic Azad University buinzahra Branch, Qazvin, Iran

Titus Pop
PhD, Partium Christian University, Oradea,
Romania

J. K. VIJAYAKUMAR
King Abdullah University of Science & Technology,Saudi Arabia.

George - Calin SERITAN
Postdoctoral Researcher
Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences
Al. I. Cuza University, Iasi

REZA KAFIPOUR
Shiraz University of Medical Sciences
Shiraz, Iran

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

Nimita Khanna
Director, Isara Institute of Management, New Delhi

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University, Kolhapur

P. Malyadri
Government Degree College, Tandur, A.P.

S. D. Sindkhedkar
PSGVP Mandal's Arts, Science and Commerce College, Shahada [M.S.]

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

C. D. Balaji
Panimalar Engineering College, Chennai

Bhavana vivek patole
PhD, Elphinstone college mumbai-32

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary, Play India Play (Trust),Meerut (U.P.)

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

Jayashree Patil-Dake
MBA Department of Badruka College Commerce and Arts Post Graduate Centre (BCCAPGC),Kachiguda, Hyderabad

Maj. Dr. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

AR. SARAVANAKUMARALAGAPPA
UNIVERSITY, KARAIKUDI,TN

V.MAHALAKSHMI
Dean, Panimalar Engineering College

S.KANNAN
Ph.D , Annamalai University

Kanwar Dinesh Singh
Dept.English, Government Postgraduate College , solan

More.....

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.isrj.net

Review Of Research
Vol. 3, Issue. 4, Jan. 2014
ISSN:-2249-894X
Available online at www.ror.isrj.net

ORIGINAL ARTICLE

दिनकर के उर्वशी काव्य में उदात्तीकरण

टी. श्रीनिवासुलु

पाचार्य. यस. बी. महाविद्यालय, अनंतपुरमु, आन्ध्रप्रदेश

सारांश :

दिनकर जी आधुनिक हिन्दी साहित्यकारों में प्रगतिवादि कवि के रूप में प्रशस्त है। उनकी रचना संसार में कुरूक्षेत्र, संस्कृति के चार अध्याय, परशुराम की प्रतीक्षा, रेणुका और हुँकार समाज की मॉग है। उनकी उर्वशी अतिविलक्षण कृति है। उर्वशी दिनकर जी की सर्वोत्तम उपलब्धि है। राष्ट्र कवि रामधारी सिंह दिनकर जी जीवन पर्यंतर संदेशवाहक कवि बने रहे। इस काव्य में जो कथावस्तु लिया गया है। वह पुराण और वेद साहित्य के आधार पर लिया गया है। ऋग्वेद में दशम मण्डल में पुरूरव की वर्णन है।

Key Words

ऊर्वशी
मनसिक संघर्श
ऊर्ध्वगमन
शरीरवादी
समाधि

प्रस्तावना :

श्री रामधारी सिंह दिनकर जी की कृति ज्ञानपीठ पुरस्कार से पुरस्कृत उर्वशी काव्य में मानवीय मूल्यों का उदात्तीकरण किया गया है। प्रतिश्ठानपुर के महाराज पुरूरवा एक संदर्भ में अप्सरा उर्वशी का रक्षा करता है। सुरांगना उर्वशी को मन चाहने लगता है। पुरूरवा की धर्मपत्नी औशीनरी पति परायण है। वह पति के हित में कार्यरत रहती है। पुरूरवा और उर्वशी गन्धमादन पर्वत पर विचरण करते है। उनके समागम से पुत्र आयु का जन्म होता है। उस पुत्र को च्यवन महर्शि की पत्नी सुकन्या पालन पोशण करती है। उस बालक को यीवनावस्था में वह पुरूरवा उर्वशी के पास ले आती है। उर्वशी शाप के कारण पुत्र के आगमन से स्वर्ग चली जाती है। पुरूरव पृत्र को राज्याभिषेक कर बानप्रस्थ हो जाता है। इस काव्य नाटक में मानव के जीवन के अधो – उर्ध्वगमन का चित्रण किया गया है। मानव के उदात्त लक्षणों के कारण किस प्रकार वह उन्नत होता है। इस काव्य में सुस्पष्ट किया गया है।

पुरूरव : पुनरस्तं परेहि दुरापना बात इवाहमस्मि 1

महाकवि कालिदास की कृति विक्रमोर्वशीयम् की कथावस्तु भी पुरूरव और उर्वशी की प्रेमाख्यान ही है। दिनकर जी ने उर्वशी प्रबंधकाव्या में अनेक उत्कृष्ट अंशों को स्थान दिया है। यह काव्य नाटक पॉच आंकों में वर्णित है। उर्वशी की काव्यात्मक शिल्प योजना ने इसे उत्कृष्ट काव्य का रूप प्रदान किया है। इस काव्य के उदात्त तत्व ही उर्वशी काव्य को विचार प्रधान महाकाव्य की संज्ञा देते है।

इस काव्य के प्रथम अंक में मेनका रम्भा संवाद में दिनकर जी अप्सराओं का प्रेम स्पर्श –शून्य प्रेम बताते है। सूक्ष्म प्रेम से वे कभी कभी मांसल प्रेम या दैहिक प्रेम का आग्रह करती है। अप्सराएँ अपने आकर्षण से या दैहिक – मिलन से मानव में नयी रचना करने की इच्छा–शक्ति जागृत करती है। नर नारी के भव्य सहज सौन्दर्य का कारण है – पुरूरवा वज्रादपि कठोर शरीर के है। उसमें पर्वत सदृश कठोरता के साथ साथ कुसुम सदृश कोमलता और पवित्रता है। नाही कोमल होती है। कोमल की रक्षा कठोर कवच से ही संभव है, इसलिए नारी कठोरता का वरण करती है। नर – नारी सौंदर्य एक दूसरे के पूरक है। एक दुसर के बिना अधूरा है। सहजन्या और उर्वशी को पुरूरवा दैत्य के कबंधहस्थों से मुक्त करवाता है। इस घटना से उर्वशी पुरूरवा से आकृश्ट होती है। वह मानुश्यत्व के उदात्त लक्षण न जानते हुए पुरूरवा से प्रेम करती है। नाही के महोत्कृष्ट कार्य सिर्फ प्रेम प्रदान करना नहीं है। वह प्रिय के समागम ही नहीं गर्भ – भार बहन करना है। अन्ततः मातृत्व की अन्तिम परिणति स्वयं को जलाकर जीवन दान देना, जीर्णावस्था प्राप्त करना है। उर्वशी की सखी सहजन्य भी इन विषयों से अनभिन्न होती है।

Title: "*दिनकर के ऊर्बशी काव्य में उदात्तीकरण* ".Source: Review of Research [2249-894X] ***टी. श्रीनिवासुलु*** **yr:2014 vol:3 iss:4**

और नारियों में भी श्लथ, गर्भिणी, सत्वशील को
देख मुझे सम्मानपूर्ण करूणा – सी हो आती है।
कितनी विवश, किन्तु कितनी लोकोत्तर वह लगती है।[2]

मातृत्व का सुख अनिर्वचनीय होता है। इसमें नारी स्वयं अवश्य गल जाती है। उसके जीवन में यह सर्वोत्रत तपस्या है। वह हिम खण्ड के समान गलकर नदी बन जाती है। इस महत्व के बारे में उर्वशी अनभिज्ञ होती हुई पुरूरवा से प्रेम करती है। द्वितीय अंक में पुरूरवा की पत्नी औशीनरी एक भारतीय नारी के रूप में सहजभाव से विश्वास करती है। वह अपने पति के लिए व्रत अनुश्ठान करती है। इस संदर्भ में दिनकर जी भारतीय परंपरागत मर्यादा को औशिनरी के माध्यम से अभिव्यक्त करते है। पति अप्सरा उर्वशी के साथ गंदमादन पर्वत पर विचलन करते हुए जानकर भी वह नैमिशेय यंज्ञ के लिए पुतिष्ठानपुर में अनुश्ठान करती रहती है। एक स्त्री के लिए पति का प्रेमभाव सबसे महत्वपूर्ण है। अपने पति के जीवन में उर्वशी के आगमन से वह निरूतर हो जाती है। इस वेदनामय जीवन से मृत्यू श्रेष्ठ मानती है। लेकिन औशीनरी के लिए यह भी असंभव है। क्यों कि पुरूरवा कामातुर होने पर भी धर्मबद्द रहता है। वह वैदिक धर्मनुसार यंज्ञानुष्ठान में वामा का अधिकार औशीनारी को ही देता है। वह प्रेयसी उर्वशी के आकर्शण से बशिभूत होने पर भी यज्ञ की पूर्णाहुति से ही पूर्ण करना चाहता है। इस धर्म के पालन के लिए नैमिशेय यज्ञ की पूर्ती हेतु मरण सदृश्य जीवन का ही वरन करती है। यह औशीनरी के लिए सापल्य पीडा हृदय भेदी है। वह निस्सहाय के उसके लिए पतिवियोग और सापल्य पीडा का गरल मृत्यू पर्यान्तर पीना पडता है। पुरूष हृदय की दुर्भलता यह है कि वह सदा विजय से तृप्त नहीं होता है, ना ही कीर्ति से संतोश की प्राप्ति करता है। वह केबल नारी सान्निध्य से तृप्त होता है। यदि जीवन संघर्ष में कही असफलता प्राप्त करता है तो वह तुरंत जननी का वक्ष स्मरण करलेता है। वह अपने दुखों का निराकरण स्त्री के सान्निध्य से कर लेता है। पुरूश की दुर्भलता नाही ही होती है। पुरूष संसार के किसी भी शत्रु से पराजित न हो परंतु मित्र नारी के हाथों अवश्य पराजित हो जाता है। औशीनरी पति पुरूरवा को उर्वशी के प्रति आकृष्ट होने से वह वास्तविक और स्वाभीविक रूप से अपने दुःख को हृदय में छिपाकर हॅसती रहती है। उसके हॅसी में भी अश्रृ–कण चमकने लगते है। यह कैसी विडंवना है औशीनरी कितनी असहाय है। वह अपनी विद्रूपती के विरूध्द लड भी नहीं सकती है। उसके पास सिर्फ एक ही उपाय है कि हृदय वेदना को बिना गायं, व्याथा को मन में ही चुपचाप सह लती है। इस समय पुरूरवा का न्याय कितना विचित्र है। संतान प्राप्ति के लिए स्वयं उर्वशी के साथ रमण करने लगता है, पत्नी को ईश्वर – आराधना और यंज्ञ अनुष्ठान करने की आज्ञा देता है।

तृतीय अंक में पुरूरवा गन्धमादन पर्वत पर उर्वशी के मिलन में कहता है कि उर्वशी के लिए इन्द्र से अनुरोध करने का विचार अने पर भी उसका मन ने विरोध किया कयों कि एक वीर क्षत्रिया के लिए भिक्षा मॉगना मर्यादा के लिए प्रतिकूल है। अपहरण नीति – विरूध्द है। पुरूरवा किसी राजा का राजत्व नही छीनना चाहता है, और नाही भूमि को छीनना चाहेगे। वह स्वयं को निमित्त – मात्र मानता है। उसकी द्वंद्व– उसमें निहित प्रेम का परिचायक है। प्रेम विहल होने पर मनुष्य तर्क–वितर्क करने लगता है। प्रेम मनुश्य में अंतर्द्वन्द्वउत्पन्न करती है। एक ही क्षण में पुरूरवा अनेक विकल्प करने लगता है। वह यह भी सोचता है कि अगर भिक्षा मॉगने से प्रेम प्राप्त कर सकते है ? उर्वशी के हृदय द्वारा कौन खोलेंगे?वह अपने आप उत्पन्न होना ही प्रेम का स्वरूप है।

दिनकर जी का उध्दश्य है काम वासनायॅ धीमी होने पर या लुप्त होने पर ज्ञान की ज्योति भी मंद पडजाती है या शान्त हो कर हृदय – साम्राज्य में अंधकार छा जाता है। पुरूरवा के हृदय में ज्ञान का दीपक फिर से प्रज्वलित होता है। हर एक मानव के जीवन में वासनात्मक क्षेत्र रहता है। मानव उस क्षेत्र में रहते हुए, उससे ऊपर उठने का प्रयत्न करता है। जिस प्रकार कमल जल और कीचड में उत्पन्न होने पर भी उनसे अलग ही रहता है। हम भी सौन्दर्याभिभूत होकर भी, उस से अलग ऊपर उठकर अपनी उन्नति के लिए ऊर्ध्वमखी होना है। इसलिए यह विचार करना है कि –

कौन है अंकुश, इसे मैं भी नहीं पहचानता हूॅ।
पर, सरोवर के किनारे कष्ठ में जो जल रही है,
आग है कोई, नहीं जो शान्त होती,
और खुलकर खेलने से भी निरन्तर भागती है।[3]

मानव की मांसल प्रेम में डूबने से कौन –सी शक्ति अंकुश लगाती है। आत्मिक प्रेम में सौन्दर्य केबल देखने की वस्तु रह जाती है। सौन्दर्य की भावना–एक भावात्मक विचार है। सौन्दर्य को रूप देने या आधार देने के लिए स्थूल पक्ष सबल होता है। स्थूल से सूक्ष्म प्रेम की ओर अग्रसर होना पडता है। पुरूरवा में आन्तर्द्वद्व और भी जटिल होता है। मानव ऊर्ध्वगमन करते समय अनेक कठिनताओं को सामना करना पडता है। कई प्रकार हे आकर्षण से मुक्त होना पडता है। नारी – सौन्दर्य पुरूष के लिए सब से बडा आकर्षण है। पुरूरवा इसी सौन्दर्य के बारे में चिंतन करना है। सौन्दर्य का वास्तविक रूप क्या है ?यह घोर मानसिक संघर्ष जो इन बाधाओं और कठिनताओं को दूर करने के लिए उसे प्रवृत्त करना है। परन्तु चट्टान के समान कठोर पुरूष सहजता से क्यों कुठिल नयानों के बाण से विजित हो जाता है। पुरूरवा की कामना मानवत्व से दैवत्व प्राप्त करना है। किन्तु उसमें जो आन्तरिक अग्नि है उसे वह कैसे विसर्जन करना है, इस से अनिभिज्ञ है। उसे लगता है यह दैहिक अग्नि मृत्यू–पर्यन्त उसे दहती रहेगी। वह मानव की दुर्बलता और भाग्य को सोचकर चितिंत होता है। मानव की दैवत्य प्राप्त करने की महत्व आकांक्षा, उसकी लालसायें और कामाग्रि उसे भौतिक संसार के जाल में फॅसाये रहती है।

काम धर्म, काम ही पाप है, काम किसी मानव को
उच्च लोक से गिरा हीन पशु – जन्तु बना देता है।
और किसी मन में असीम सुशमा की तृशा जगा कर
पहुॅचा देता उसे किरण – सेवित अति उच्च शिखर पर।[4]

मानव में निहित द्विपक्षता बाहय संसार से मुखर हो उठती है। वह अपने मैं दैवत्व और दानवत्व दोनो और जाने में क्षमता रखता है। मानव की यही विशेषता है कि उसमें सम और विषम गुण विद्यमान है। वह अपने में ज्ञान ज्योति जगाने पर ही इनमें कौन सा सम कौन सा विषय है उसे ज्ञात होता है। लेकिन इस घोर मानसिक संघर्ष में विषम उसे सम लगता है। वह इस दैहिक अग्नि को दुर्भेद्य समझता है। अनजाने में ही वह दैहिक सुखों के समुख नतमस्तक होता है। उसके लिए उर्ध्वगमन सुगम भी नही है। उसके लिए कठोर साधना की आवश्यकता होती है। अनेक भौतिक आकाक्षों को तिरोभूत करना पडता है। यह उसके लिए उर्ध्वगमन सुगम भी नही है। उसके लिए कठोर साधना की आवश्यकता होती है। अनेक भौतिक आकाक्षों को तिरोभूत करना पडता है। यह उसके लिए दुःसाध्य और दुर्गम प्रतीत होता है।

पुरूरवा के मन में अनेक विचार उसे वशीभूत कर लेते है – प्रेम का आधार यह मांसलता ही है। प्रेम दैवत्य पाने या उर्ध्वगमन में बाधक बनती है। प्रेम एक जठिल स्वरूप है। मांसल प्रेम की त्याग कर सूक्ष्म प्रेम तर पहॅचने में प्रेम ही अवरोधक है। मानव दैवत्य पाने में इसलिए असफल हो रहा है। उर्वशी पुरूरवा के समुख कुढ प्रश्न प्रस्तुत करती है कि निर्जन स्थानों में मौन रूप में ब्रह्म व्याप्त है, झरनों के कल कल नाद

में है। नभ में ज्योति पुंज बनकर पाताल में अंधकार बनकर व्याप्त है। वह प्रत्येक वस्तु के कण कण में व्याप्त है तो कुछ वस्तुओं से यह पलायन कैसे? पुरूरवा कौन सी नई बात जी तुम्ही शून्य अम्बर की ओर आकर्शित कर रही है।

शिखरों में जो मौन, वही झरनों में गरज रहा है,
ऊपर जिसकी ज्योति, छिपा है बडी गर्त के तम में।
तब किस भय से भाग रहे नीचे की तिमिर पुरी से?
शिखरों पर का कौन लोभ ऊपर को खीज रहा है? [5]

वह पुरूरवा से कहती है कि अकाम आनंद उन्हे प्राप्त होता है, जिनकी मानवेन्दियॉ और मन सहजता से शान्त मुद्रा में मन के द्वारा खोलते है चिन्ता रहित निश्कलुश आनंद प्राप्त होता है।

यह अकाम आनंद भाग सन्तुष्ट – शान्त उस जन का,
जिसके संमुख फलासक्तिमय होई ध्येय नहीं है,
हम निसर्ग के स्वयं कर्म है, कर्म स्वबाव हमारा,
कर्म स्वयं आनन्द, कर्म ही फल समस्त कमों का।[6]

नाही के रूप में सर्वव्यापि गुण होते है कि – मीठा शीतल और गुप्त स्त्रोत शारीरिक सौंदर्य ही नही मानसिक सौंदर्य जो एक कलाकार के लिए कलात्मक चेतना और एक दार्सनिक के लिए दर्शन का आधार। दिनकर जी उर्वशी में सूफि तत्वों को प्रतीक के रूप में अभिव्यंजित करते है। आत्मा पुरूष तत्व है, जो पुरूरवा के रूप में अभिवर्णित है। परमात्मा नारी तत्व है जो उर्वशी के रूप में वर्णित है। आत्मा परमात्मा से चिर मिलन के लिए जिस प्रकार प्रतीक्षित होता है उसी प्रकार पुरूरवा उर्वशी के मिलन के लिए पस्तिप्त होता है।

चतुर्थ अंख में च्यवन महर्षि की पत्नी सुकन्या उवशी के पुत्र आयु को गोद लेती है। महर्षि च्यवन नारी के प्रति अपार गौरव प्रकट करते है। इस संसार में संपूर्ण नारी जाति को गौखमय स्थान दिया गया है। पुरूष नारी के शरीर से प्रेरित होकर शरीरवादी हो जाता हे। हृदय की महत्व को विस्मूत कर देता है। भक्त ईश्वराधना के लिए एक सुंदर चित्रमय मंदिर बनाये परंतु वह मंदिर चित्रमयता में इतने खो जाये कि उस मंदिर के प्राण ईश्वर का स्मरण ही भूल कर सुख–दुःख इकट्टे ही साध्य है। नर नारी, युवा, प्रौढ और वृध्दावस्था तक इकट्टे ही चलते है। प्रेम के नाव में समुद्र रूपी संसार को पार कर देते है।

एक–दुसरे के उर में हम ऐसे बस जाते हैं,
दो प्रसून एक ही वृन्त पर जैसे खिले हुए हों।
फिर रह जाता भेद कहॉ पर शिखिर, घाम, पावस का?
एक संग हम युवा, संग ही संग वृध्द होते है।
मिल कर देते खेप अनुध्दत मन विभिन्न ऋतुओं को
एक नाव पर चढे हुए हम उदधि पार करते हैं।[7]

च्यवन महर्षि नारी के मातृत्व की गरिमा सुस्पष्ट करते है। नारी अपने सौंदर्य से वीर पुरूषों को आहत कर विजित करना स्लागनीय है। एक नारी गर्भ धारण कर गर्भ के भार से शिथिल हो उस तेजशविनी नारी को देखकर सम्मान–करूणा हो आती है। उसके सौंदर्य में कोई अलौकिक भावना है। स्त्री–पुरूष की तुलना से अत्युन्नत है। वह संतानोत्पत्ति का पूर्ण भार अपने ऊपर लेती है। इस में पुरूष का भाग नगण्य है। वह अकेली गर्भ भार सहन कर शिशु को जन्म देती है। उस शिशु को हृदय के उच्च संसार में ले जाती है। इस सृष्टि मे कण–कण परब्रम्ह का स्वरूप है, तो ईश्वर ही शिशु बनकर सर्वदा स्त्री के गर्भ में जन्म लेता है। प्रत्येक स्त्री महा पुरूष की जननी होती है। उस शिशु के भवतव्य के कारण वह महिमान्वित बनती है। जननी सामान्य नहीं होती है। जननी का महत्व अद्ददभुत है, अद्वितीय है और अपरिसीम्य है।

उर्वशी संकट परिस्थिती में उद्विग्रमय है। वह पुत्र प्रेम के लिए पती का प्रेम नही ंतज सकती है। विधि की विडंवना देखो उर्वशी के लिए एक और पुत्र है, दुसरी और पति प्रेम है। उर्वशी के लिए हृदय की सहज प्रेम एक अनैक्य विषय है। दिनकर जी मांसल प्रेम की अनिवार्यता और सहज सिद्दता को स्पष्ट करते है, किंतु सूक्ष्म प्रेम जो समाधि की अवस्था तक ले जाती है। शून्य के अंतराल से संबंध स्थापित कर लेने के लिए गम्भीर, गहन दिव्य प्रेम की आवश्यकता है।

बुध्दि मानव को वास्तविक जगत से दूर कही कल्पना लोक में ले जाती है और मानव को लक्ष्य भ्रष्ट कर देत है। इसलिए बुध्दितत्व की अपेक्षा अनुभव सत्य महत्वपूर्ण है। बुध्दितत्व के आधार पर या तार्किक पक्ष के आधार पर देखने से किसी निर्माण को निश्पाण के रूप में देख सकते है। चित्र या मूर्ति में बौध्दिक शक्ति से भी कलाकार का हृदय पक्ष सबल होकर उस राग युक्त हृदय पक्ष की आवश्यकता है।

दिनकर जी इस काव्य के द्वारा स्पष्ट करते है – मानव जीवन किस प्रकार से संघर्ष रत रहता है। सत्य के लिए जीवन पथ पर सुख – दुःख, आशा – निराशा, विरह – मिलन, योग – वियोग, लालसा –वीतरग आदी द्वंद्व उसे घेरते है मानव को इस सबसे ऊपर उठकर आकाश की उन ऊॅचाइयों तक पहुॅचना है। जब वहॉ तक पहुॅच जाऐगे तो सांसारिक पार्थिव भोग एक दम तुच्छ लगने लगते है। ऊर्ध्व गमन प्राप्त कर उदात्तिरकण और अतेंद्रिय सथिति को प्राप्त करना है। उदात्तिकरण से हृदय से सांसारिक सुख वैभवहीन लगना है। प्रेम के पक्ष को केबल दाहत के रूप में नहीं लेना है। प्रेम में अमृतत्व भी सत्य है। लेकिन अज्ञानरूपि आच्छादन से नर नारी के बाहयरूप से मदहोप हो जाता है।

उसका लक्ष्य निर्माण सदेह नारी से हो जाती है। इस मांसल और पार्थिव प्रेम से भिन्न होकर दार्शनिक चेतना प्राप्त कर लेने पर नारी में दिव्य और अव्यक्त प्रेम का दर्शन करता है, वह शाश्वत सौंदर्य को नमन करना करता है। नर में रहस्य चिंतक जाग जाने पर पार्थिव प्रेम से अपार्थिव प्रेम था आत्मिक प्रेम की ओर अग्रसर होता है। उस में रजस् एवं तमस् के गुण लुप्त होने पर सत चित में प्रवेश कर नर की तृश्णा को दूर कर देती है। पुरूरवा को इस सहज समाधि तक पहुॅचने के लिए उचित दिशा का ज्ञान नहीं है।

पुरूरवा कहीं – कहीं अद्वैतवाद की भावना से प्रेरित है। वह शाश्वत तत्वों पर अपना विचार इस प्रकार प्रकट करता है कि –

रूको समय सरिते! पल! अनुपल काल – शकला! घटिकाओं!
इस प्रकार, आतुर उडान भर कहॉ तुम्हें जाना है?
कहीं समापन नहीं उर्ध्व – गामी जीवन की गति का,
काल – पयोनिधि का त्रिकाल में कोई कूल नहीं है।

कहीं कुण्डली मार बेठ जाओ नक्षत्र निलय में
मत लो जाओं खींच निशा को आजसूर्य – वेदी पर।[8]

उर्ध्वगामी के लिए जीवन की गती में कोई अंत ही नहीं इस काल समुद्र का तो कोई किनारा नहीं है। त्रिकाल में किसी एक का शाश्वत अस्तित्व नहीं है। वर्तमानकाल पल में भूतकाल हो जाना भविश्य पलक झपते ही वर्तमान हो जाता है। और भूतकाल कभी वर्तमान या भविष्य न बन पाये इस अनंत क्रीडा में हम काल का अतिक्रमण कहा करें। इस सृष्टी में लोक – परलोक, अंदर – बाहर, सुख – दुःख, स्वर्ग – नरक, वह द्वंद्व एक इसके के लिए प्रतिबिंब हो जाते है। पुरूरवा उर्वशी से कहता है यह मानव शरीर नशवर है। इस शरीर में जो ज्योति पुंज है वह अनश्वर है। मानव निश्चेतन अवस्था में प्रेमिका के शिथिल देह का आलिंगन नहीं करता है। वह उस अपूर्व ज्योति का आलिंगन कर अंतर्मुखी हो जाता है। अंतर्मुखी होकर आध्यात्मिक संसार में प्रवेश करते ही चित्त की समस्त मलिनतॉ मिट जाती है। इस से चित्त ब्रम्हरूप को प्राप्त कर शुभ्र ज्योत्सना की आभा को प्राप्त करती है। नारी परब्रम्ह स्वरूप है, इसलिए उर्वशी के द्वारा दिनकर जी कहलवाते है – मैं सब कही हूॅ समुद्र का किस्तार मेरा विस्तार है। देवताओं में देवता मैं हूॅ यह धूप नैवेध की गंध मेरी ही प्रतिमा को घेरे हुए है –

नारी असीम, शाश्वित होती है। वे नर नारी के मिलन की अनिवार्यता को स्वीकारते हुए समाधि सथिति तक पहुॅचने के लिए योग साधना उच्चित मानते है। मानव किन्तु भोग साधना में व्यक्त है। पुरूरवा और उर्वशी के पुत्र आयु, सुकन्या के अश्रम में पलकर सुयोग्य बनता है। पुरूरवा पंचम अंख में भविष्य के प्रति चिंतित होता है। वह स्वप्न में आश्रम के पास एक वीर को देखता है। वही वीर जागृत अवस्था में सुकन्या के साथ सभा में प्रस्तुत होता है। आयु के आगमन से निस्संदेह पुरूरवा अमितानंद प्राप्त करता है।

हिंदू संप्रदाय के अनुसार पुत्र नरक से त्राण करनेवाला होता है। उसके पिण्डदान से ही आत्मा की मुक्ति प्राप्त होती है। यह विषय भी सोद्देश्य है। मानव को कर्तव्य पथ पर कठिन परिस्थितियों में भी अग्रसर होना है। संपूर्ण गृहस्थ धर्म का बानप्रस्था को ग्रहण करना है। पुरूरवा आयू से मिलने के पश्चात उर्वशी अदृश्य होने का कारण भरतशाप है। इसमें भी प्रतीकात्मकता है। मानव को भोग लालसता से स्वयं मुक्त होने का समय यही है। वह वृध्दाप्य में मन से उर्वशी रूपी भोग आनंद से पुरूरवा मुक्त होकर अलौकिक अदृश्य आनंद की ओर बढने के लिए अपने जिम्मेदारियों को पूर्ण कर आयु का राज्याभिशेक कर देता है। इस परिस्तिथि में पुरूरवा अंतद्वैद्व प्रतीत होता है। उर्वशी के प्रति आकर्षण इच्छाओं के प्रति सम्यम प्राप्त करना कठिन होता है। यहॉ तक कि पुरूरवा सुरराज इन्द्र पर आक्रमण करने तैयार हो जाता है। मानव को इच्छाओं पर नियंत्रण दुर्लभ प्रतीत होता है। मन को दृढ कर वह अंतिम ऋण चुकाने के लिए सन्निद्व होता है। दैव ऋण, पितृ ऋण और गुरू ऋण इन तीनों ऋणों से ऋण मुक्त होने की वैदिक संस्कृति प्रबोध करती है। पुरूरवा दैव ऋण से विमुक्ति पाने बनगमन करता है।

कामानु भूति तो मानव की आदिम प्रवृति है। दिनकर जी ने उसका परिष्कार चाहा है। लेकिन कवि स्वयं द्वन्द्र होने के कारण समाधान नहीं दे पाये है। मनुष्य के इस द्वन्द्र का, साकार से ऊपर उठकर निराकार तक जाने की इस आकुलता अथवा ऐन्द्रियता से निकलकर अतीन्द्रिय जगत में ऑख खोलने की इस उमंग का प्रतीक पुरूरवा है। मनुष्य के सारे व्यक्तित्व, समग्र जीवन का आकार उसकी जैवी भावनाओं का घरातला है। संन्यास में समाकर प्रेम से और प्रेम से समाकर सन्यास से बचना बहुत कठिन है। सन्यास और प्रेम मे सन्तुलन और भी कठिन कार्य है। मनोविज्ञान जिस साधना का संकेत देने लगा है। वह वैराग्य नहीं, रोगों से मैत्री का संकेत, निशेध नहीं स्वीकृत और समन्वय। उसमें संघर्ष नहीं, सहज, स्वच्छ, प्राकृतिक जीवन की साधना है। देवता सारी आसक्तियों के बीच में अनासकत रहते है। सारी स्पूहाओं को भोगते हुए भी निस्पूह और निर्लिप्त होते है। कवि इस काव्य में पुरूरवा के बेचैनी को जानते हुए भी पुरूरवा के सन्यास पर काव्य समाप्त नहीं करते है। क्यों कि औशीनरी की व्यथा कविता को वहॉ समाप्त करने नहीं दिया। प्रेम की उदात्तीकृत रूप औशीनरी की व्यथा कविता को वहॉ समाप्त करने नहीं दिया। प्रेम की उदात्तीकृत रूप औशीनरी आयु को अपनाने में व्यंजित हुई है।

नारी क्रिया नहीं, वह केवल क्षमा, क्षान्ति, करूणा है,
इसलिए, इतिहास, पहुॅचता जभी निकट नारी के,
हो रहता वह अचल या कि फिर कविता बन जाता है।[10]

औशीनरी आयू को जन्म न देने पर भी पती के द्वारा उत्पन्न संतान को निर्विरोध अपनाती है। उसमें विनम्र और एक समर्पित नारी को देख सकते है। इस काव्य में नारी को विमुध्द प्रेयसी के रूप में और अमूत धर्मा बलप्रदायिनी माता के रूप में भी देख सकेंगे। दिनकर जी इस काव्य में नारी के विराट स्वरूप को मुग्य मनोहर रूप में अभिव्यंजित कर पाये है।

ग्रन्थ सूचि

1) ऊर्वशी – दिनकर – भूमिका, लोक भारती प्रकाशन, सं – 1992
2) ऊर्वशी – दिनकर – पृ : 90, लोक भारती प्रकाशन, सं – 1992
3) ऊर्वशी – दिनकर – पृ : 36, लोक भारती प्रकाशन, सं – 1992
4) ऊर्वशी – दिनकर – पृ : 66, लोक भारती प्रकाशन, सं – 1992
5) ऊर्वशी – दिनकर – पृ : 61, लोक भारती प्रकाशन, सं – 1992
6) ऊर्वशी – दिनकर – पृ : 62, लोक भारती प्रकाशन, सं – 1992
7) ऊर्वशी – दिनकर – पृ : 86, लोक भारती प्रकाशन, सं – 1992
8) ऊर्वशी – दिनकर – पृ : 54, लोक भारती प्रकाशन, सं – 1992
9) ऊर्वशी – दिनकर – भूमिका – ग, लोक भारती प्रकाशन, सं – 1992
10) ऊर्वशी – दिनकर – पृ : 128, लोक भारती प्रकाशन, सं – 1992

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal
For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished research paper.Summary of Research Project,Theses,Books and Books Review of publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- International Scientific Journal Consortium Scientific
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- DOAJ
- EBSCO
- Crossref DOI
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database

Review Of Research Journal
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.isrj.net